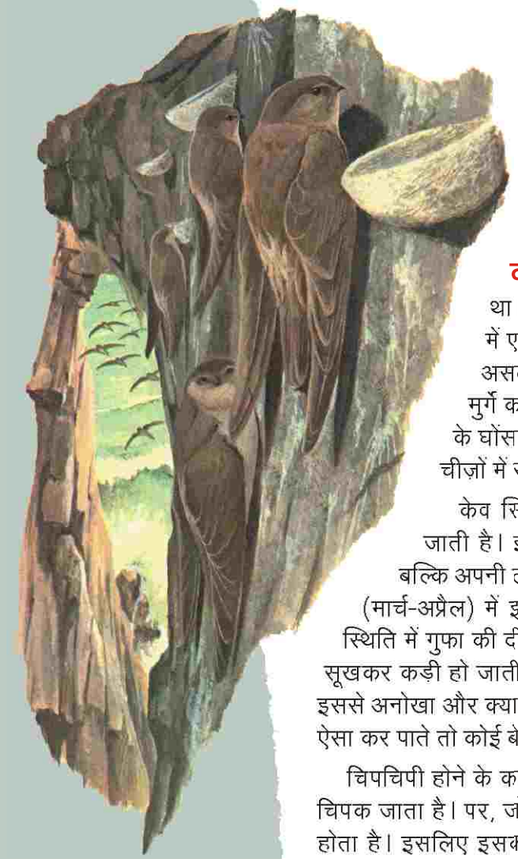

गुफा में लटके घोंसले

घोंसले का शोरबा

कई सौ साल पहले चीन में हुई सांग नाम का बादशाह हुआ करता था। एक बार चित्रकारों के सम्मान में उसने राजमहल में दावत दी। दावत में एक खास तरह का शोरबा (रस) मेहमानों को पिलाया गया। यह शोरबा असल में एक चिड़िया के घोंसले का "सूप" यानी शोरबा था। सब्ज़ियों का, मुर्गे का सूप तो लोग खूब पीते हैं। मगर यह केव स्विफ्टलेट नाम की चिड़िया के घोंसले का सूप है। आज की तारीख में यह दुनिया की सबसे महँगी खाने की चीज़ों में से एक है।

केव स्विफ्टलेट चीन, थाईलैंड, इण्डोनेशिया, भारत और मलेशिया में पाई जाती है। इसका घोंसला बहुत खास होता है। यह तिनकों और पंखों से नहीं, बल्कि अपनी लार से घोंसला बनाती है। इसकी लार गोंद जैसी होती है। प्रजननकाल (मार्च-अप्रैल) में इसकी लार ग्रंथियाँ फैल जाती हैं। और स्विफ्टलेट बड़ी ही मुश्किल स्थिति में गुफा की दीवार से चिपककर लार की परतें निकालती जाती है। लार निकलते ही सूखकर कड़ी हो जाती है। इस तरह एक छोटी कटोरी जैसा घर तैयार हो जाता है। सोचो, इससे अनोखा और क्या होगा कि कोई अपना घर अपनी ही लार से बना ले। काश, इन्सान भी ऐसा कर पाते तो कोई बेघर नहीं रहता!

चिपचिपी होने के कारण केव स्विफ्टलेट की लार में तिनके, आसपास का कचरा आदि भी चिपक जाता है। पर, जो घोंसला केवल लार से बनता है वह सफेद और लगभग पारदर्शी-सा होता है। इसलिए इसकी कीमत बाकी घोंसलों के मुकाबले काफी ज़्यादा होती है। ऐसे एक किलो घोंसले की कीमत लगभग 4-5 लाख रुपए होती है। इन घोंसलों का सबसे बड़ा खरीददार देश है हॉन्गकॉन्ग। हर साल यह लगभग 100 टन घोंसले खरीदता है। कहते हैं कि इन घोंसलों में प्रोटीन की काफी मात्रा होती है। और इससे भूख भी बढ़ती है।

केव स्विफ्टलेट जिन गुफाओं में घोंसले बनाती है उनकी बात भी कम दिलचस्प नहीं। इनके ज़्यादातर घोंसले गुफा की सबसे ऊँची छत से लटके रहते हैं। इससे गुफा में रेंग रहे साँप, टिड्डों आदि से इनके अण्डों का बचाव हो जाता है। मज़ेदार बात यह है कि दिन में इनके घोंसलों में चमगादड़ बसेरा करते हैं और रात में स्विफ्टलेट। इसलिए ऐसी गुफाओं में सुबह-शाम का वक्त बड़ा ही गहमगहमी भरा होता है। सुबह के वक्त रात बाहर बिता कर आए चमगादड़ भीतर आ रहे होते हैं, और स्विफ्टलेट गुफा में रात बिताकर बाहर खाने की खोज में जा रही होती हैं। शाम को स्थिति इससे उलट होती है। बाज़, चील इस आपाधापी का फायदा उठाने के लिए वहाँ मण्डराते रहते हैं। मौका मिला और झपट्टा मार दिया। गुफा की छत, दीवारों से लटकते साँप भी झपट्टा मारने में कम उस्ताद नहीं होते। गुफा के फर्श पर भी कई तरह की मकड़ियाँ, केंकड़े, मेंढक, कीड़े-मकोड़े घूम रहे होते हैं। ऊपर से गिरा किसी भी तरह का भोजन मिनटों में चट हो जाता है। चाहे वह चमगादड़ों या स्विफ्टलेट द्वारा जंगल से लाए गए भोजन के टुकड़े हों, उनकी बीट हों या अपनी शुरुआती उड़ानों में न सम्भल पाने के कारण गिरे स्विफ्टलेट के बच्चे हों। गुफाओं के घुप्प अँधेरे में स्विफ्टलेट चमगादड़ों की तरह रास्ता खोजती हैं। वे ज़ोर की आवाज़ निकालती हैं जो गुफा की दीवारों से टकराकर इन तक पहुँचती है। इसी आवाज़ से रास्ते का अन्दाज़ा लगता है।

पुर्तगालियों द्वारा बनाया वेंगुरला (महाराष्ट्र) लाइटहाउस। अब स्विफ्टलेट का बसेरा।

फोटोः पी. एम. लाड

काफी ऊँचाई पर बने स्विफ्टलेट के कीमती घोंसलों को उतारना खतरे से खाली नहीं। इस काम में अक्सर लोगों की जान तक चली जाती है। ज़रा सोचो, राजा ने जो सूप पिलाया उसके लिए कितने लोगों की जान दाँव पर लगी होगी!

वैसे, आजकल इन घोंसलों को पाना थोड़ा आसान हो गया है। वियतनाम, इण्डोनेशिया, थाइलैंड आदि देशों में लोग इन चिड़ियों को पनाह देने लगे हैं। इसलिए घरों में, मीनारों में ये घोंसले मिल जाते हैं। स्विफ्टलेट की लार से बने घोंसलों को छोड़कर बाकी सभी घोंसलों को उसमें रखे अण्डे सहित नष्ट कर दिया जाता है। इससे वहाँ सही घोंसले बनाने वाली स्विफ्टलेट ही बचती हैं।

गुफा की छत में लटके घोंसले

कहते हैं कि घोंसले के शोरबे की शुरुआत यूँ हुई...

बहुत समय पहले की बात है। चीन में एक राजा था जिसे नए और अच्छे पकवान खाने का बहुत शौक था। शाही रसोइया भी इस बात का बहुत ध्यान रखता था। वह रोज़ एक नया पकवान राजा के लिए बनाता था। यह उसकी मजबूरी भी कही जा सकती थी। अगर वह किसी दिन नया पकवान न बना पाता तो आदेश के मुताबिक राजा उसका सर कटवा देता। एक दिन रसोइए को कुछ सूझ नहीं रहा था। कुछ भी नया पकाने को न था। वह बहुत परेशान हुआ। यह सोचकर शहर में निकल गया कि शायद कुछ नया मिल जाए। घूमते-घूमते वह बन्दरगाह पर पहुँच गया। वहाँ एक व्यापारी ने उसे एक चिड़िया का घोंसला दिखाया। व्यापारी ने बताया कि यह घोंसला बोरनियो द्वीप में पिया जाता है। बोरनियो के लोगों का मानना है कि इसे पीने से उम्र बढ़ती है। पर उस व्यापारी को घोंसला पकाने की तरकीब नहीं पता थी। शाही रसोइए ने घोंसला खरीदा और पूरी कुशलता के साथ उसका शोरबा (रस) पकाया। खाने के समय यह शोरबा बहुत सजाकर राजा के सामने पेश किया गया। रसोइए ने कहा कि यह लम्बी उम्र देने वाला शोरबा है। देखने में वह शोरबा बहुत अच्छा लग रहा था और उससे मन मोहने वाली सुगन्ध भी उठ रही थी। पर, जब राजा ने उसे खाया तो स्वाद बिलकुल सादा था, कुछ भी नया न था। राजा को क्रोधित होते देख रसोइए ने शोरबे के फायदे बताने शुरू किए। बोरनियो में लोग इस शोरबे के ही कारण ज़्यादा जवान, स्वस्थ और लम्बी उम्र वाले होते हैं। इसी शोरबे को पीने के कारण उनका जीवन इतना खुशहाल है। यह सुनते ही राजा बहुत खुश हो गया और उसने इस पकवान को राजसी पकवान का दर्जा दे दिया। शाही रसोइए को इनाम मिला और घोंसले का शोरबा राजा रोज़ पीने लगा। लेकिन वह चिड़िया के घोंसले का शोरबा था, यह असलियत रसोइए ने राजा को कभी नहीं बताई। और कभी पता चले भी न इसके लिए वह हर बार बोरनियो से घोंसला लाने वाले को मरवा देता था।

सामग्री साभारः *पिटारा*

घासफूस चिपके घोंसले में बैठी स्विफ्टलेट

फोटोः पी. एम. लाड

स्विफ्टलेट एक बार में एक ही अण्डा देती है।

घोंसले से चिपका अण्डा

घोंसले में स्विफ्टलेट का बच्चा

सभी फोटोः *बर्ड ऑफ वैस्टर्न घाट से साभार*